International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राष्ट्र निर्माण में हिन्दी कविता का योगदान

डॉ.अभिषेक पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, योगदा सत्संग महाविद्यालय, राँची

साहित्य समाज में सौहार्द,एकता और जागरूकता फैलाता है,इसलिए राष्ट्र निर्माण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिन्दी साहित्य में निहित राष्ट्रीय भावना अत्यधिक व्यापक और विस्तृत है। इसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता के साथ–साथ राष्ट्र की सर्वांगीण विकास की भावना दिखाई देती है।साहित्य की सभी विधाओं (कविता,कहानी,उपन्यास,नाटक,निबंध आदि)में राष्ट्रीय चेतना की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है, किन्तु राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से कविता का विशेष महत्व है।

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता के मुख्यतः दो रूप मिलते हैं,एक तो विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों और उनके वंशजों के अत्याचार के विरुद्ध और दूसरा ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया के रूप में। हमारे प्राचीन काव्य(आदिकाल से रीतिकाल तक) में पहला रूप उपलब्ध होता है जबकि आधुनिक काव्य में दूसरा। मध्यकाल में राजस्थान के अनेक डिंगल कवियों ने जातीय गौरव से अनुप्राणित मुक्तक छन्दों की रचना की है।उस युग में समस्त हिन्दू गौरव के प्रतिनिधि एवं प्रतीक महाराणा प्रताप थे। इन कवियों ने इसी महापुरुष को आलंबन बनाकर काव्य रचना की है। बीकानेर के महाराजा पृथ्वीराज ने व्यक्तिगत रूप से अकबर की प्रभुसत्ता को मान्यता दे दी थी, किन्तु उनकी दृष्टि में जब तक महाराणा प्रताप स्वतंत्र थे, हिन्दू गौरव का पताका मुक्त रूप से फहरा रहा था। जब उन्होंने सुना कि महाराणा प्रताप भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर रहे हैं तो उन्हें लगा, मानों हिन्दू गौरव का सूर्य अस्त हो रहा है, अतः उन्होंने महाराणा प्रताप को लिखा– **"पटकूँ मूँछा पाण कै पटकूँ निज तन करद/दीजे लिख दीवाण, इण दी महली बात इक"1** महाराणा प्रताप के अनन्तर हिन्दू राष्ट्रीयता के संरक्षक छत्रपति शिवाजी एवं महाराणा छत्रसाल रहे। इन दोनों महापुरुषों को आलम्बन मानकर महाकवि भूषण ने ओजस्वी काव्य की रचना की। उस युग में औरंगजेब के अत्याचारों के कारण देश की बहुसंख्यक हिन्दू जनता दुखी हो रही थी। हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति खतरे में पड़ गई थी, ऐसी स्थिति में शिवाजी ने जो कार्य किया वह राष्ट्रीय महत्व का था। दूसरे,महाकवि भूषण की प्रशंसा उनके व्यक्तिगत वैभव के आधार पर नहीं करते, बल्कि उन्होंने उन्हें राष्ट्र के रूप में चित्रित किया है– **"बेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे/राम नाम राख्यो अति रसना सुधर में/हिंदुन की चोटी रोटी राखी है/सिपाहिन की कांधे में जनेऊ राख्यो मालाराखी गर में/मीड राखे मुगल मरोडीराखे पातसाह/बैरी पीसि राखे दरदान राख्यो कर में/राजन की हद राखी तेगबल सिवराज/देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो गर में"2** डॉ.विमल कुमार जैन ने लिखा है– **"भूषण मुसलमानों के विरोधी नहीं थे,वरन् औरंगजेब के विरोधी थे....भूषण जाति द्वेष के शिकार नहीं थे वरन् एक सच्चे राष्ट्र–भक्त थे।"3**

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

आधुनिक हिन्दी काव्य का तो विकास ही उस समय हुआ जबकि समूचे राष्ट्र में ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध स्वतंत्रता का आन्दोलन चल रहा था, अतः आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की व्यंजना होना स्वाभाविक था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र और उनके युग के अन्य कवियों ने परंपरागत संकुचित राष्ट्रीय भावना से ऊपर उठकर भारत के गौरवशाली अतीत, वर्तमान की दुर्दशा का चित्रण, अंग्रेज सत्ता के प्रति नफरत फैलाकर समाज सुधार तथा आत्मगौरव का भाव जगाने का कार्य किया। भारतेन्दु ने अंग्रेजों की शोषण नीति के प्रति व्यंग्य करते हुए लिखा है– **"भीतर–भीतर सब रस चूसै/हंसि हंसि के तन–मन धन मूसै/जाहिर बातन में अति तेज/क्यों सखि साजन नहिं अँगरेज/सब गुरुजन को बुरो अतावै/अपनी खिचड़ी आप पकावै/भीतर तत्व न झूठी तेजी/क्यों सखि साजन नहिं अँगरेजी"4** अंग्रेजों ने भारत को हर दृष्टि(सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक,सांस्कृतिक)से बर्बाद कर दिया था।चारों तरफ आलस्य, निराशा,भय,अत्याचार और आतंक का ही साम्राज्य दिखाई देता था।भारत–दुर्दशा को भारतेन्दु देख नहीं सके तभी तो उन्होंने लिखा– **"रोवहु सब मिलिं आवहु भारत भाई/हा हा!भारतदुर्दशा न देखी जाई/सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनों/सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो/सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो/सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो/अब सबके पीछे सोई परत लखाई/हा हा!भारत दुर्दशा न देखी जाई"5** भारतेन्दु की कुछ कविताओं में तो राष्ट्रीयता का स्वर बहुत तेज हो गया है। एक ओर उन्होंने देशवासियों को जगाने का प्रयत्न किया तो दूसरी ओर वे अंग्रेज शासकों की कुटिल नीति की भर्त्सना स्थान–स्थान पर करते हैं। अंग्रेजों की अफगानिस्तान विजय पर सारे देश में दिवाली मनाई गयी थी, किन्तु भारतेन्दु इसका विरोध करते हुए पूछते हैं– आर्यों को इससे क्या मिला?वे क्यों खुशी मनाते हैं?जबकि इस युद्ध से भारत की क्षति ही हुई है।उन्होंने विजय–वल्लरी कविता में अंग्रेज शासकों की कूट–नीति का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है– **"स्ट्रैजी डिजरैली लिटन चितय नीति के जाल/फसि भारत जरजर भयो काबुल युद्ध अकाल"6** अन्त में वे अंग्रेजों की नीति का रहस्योद्घाटन करते हुए निर्भीकतापूर्वक घोषित करते हैं – **"सत्रु सत्रु लड़वाई दूर रहिं लखिय तमासा/बल देखिये जाहि ताहि मिलि दीजै आसा"7** भारतेन्दुयुगीन कवियों ने अपनी सजग राजनीतिक चेतना के फलस्वरुप विदेशी शासन के अत्याचारों से पीड़ित भारतीय जनता में देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता जगाने का प्रयास किया। इस दृष्टि से राधाचरण गोस्वामी की 'हमारो उत्तम भारत देस', राधाकृष्ण दास की 'भारत बारहमासा', बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' की 'धन्य भूमि भारत सब रत्ननि की उपजावनि', प्रताप नारायण मिश्र की 'महापव' कविता उल्लेखनीय है। डॉ.शेखरचंद्र जैन के शब्दों में– **"वास्तव में भारत जब सभी क्षेत्रों में परतंत्र होकर हीन दशा में आँसू बहा रहा था,उस समय भारत की विशाल भूमि,अतीत की समृद्धि और गौरव–गाथाओं द्वारा ये कवि देश को नवीन चेतना प्रदान कर रहे थे।"8**

द्विवेदी युग में देश के लिए त्याग,बलिदान,उत्सर्ग और प्रेरणा के लिए कविता प्रमुख माध्यम बन गई थी। इस युग में मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, महावीरप्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने देश की एकता, स्वाधीनता, स्वतंत्रता और उत्थान के लिए

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राष्ट्रीय भावना से युक्त उत्कृष्ट कविताओं की रचना की। मैथिलीशरण गुप्त की भारत– भारती राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति की सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना है जिसमें उन्होंने देश की वर्तमान अवनति और अधोगति को अंकित कर अपने क्षोभ को प्रकट किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– **"इसमें वह संजीवनी शक्ति है जिसकी प्राप्ति हिन्दी के और किसी भी काव्य में नहीं हो सकती। इससे हम लोगों की मृतप्राय नसों में शक्ति का संचार होता है,क्योंकि हम क्या थे और अब क्या हैं,इसका मूर्तिमान चित्र इसमें देखने को मिलता है।"9** 'भारत–भारती' की राष्ट्रीय चेतना के प्रभाव से देश के सैकड़ों नौजवान स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े तथा अंग्रेजों की दमनात्मक नीति का विरोध करते हुए जेल गये। इसके अतिरिक्त गुप्तजी के अन्य काव्य–ग्रन्थों में भी राष्ट्र–प्रेम,देश–सेवा, त्याग और बलिदान की प्रेरणा दी गई है। 'स्वदेश संगीत' में उन्होंने परतंत्रता की घोर निंदा करते हुए भारत की सुप्त चेतना को जगाने का प्रयास किया तो 'अनघ' में सत्याग्रह की प्रेरणा देते हुए राष्ट्र–सेवा, राष्ट्र–रक्षा, आत्मोत्सर्ग की भावनाओं का निरूपण किया। गुरुकुल काव्य में सिक्खों के बलिदान पूर्ण आख्यानों द्वारा देशवासियों में राष्ट्रीयता जगाने का प्रयास किया वहीं 'अर्जन और विसर्जन' काव्य की रचना करके उन्होंने देशवासियों को शिक्षा दी कि स्वतंत्रता के लिए हमें त्याग और बलिदान हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए। आत्मोत्सर्ग एवं आक्रोश का क्रुद्ध रूप रामनरेश त्रिपाठी की इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है–**"क्रुद्ध सिंह सम निकल प्रकट कर/अतुलित भुजबल विषम पराक्रम/युद्ध भूमि में भी वे वैरी का/दर्प दलन कर लेते हैं हम/या स्वतंत्रता की वैदी पर, कर देते हैं प्राण निछावर।"10**

छायावाद एवं छायावादोत्तर युग में माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन ,सियारामशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, रूपनारायण पांडेय आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना भरने एवं भारत की समृद्धि के लिए जनमानस को प्रेरित करने का काम किया। डॉ.नगेन्द्र के शब्दों में– **"छायावाद एवं छायावादोत्तर काल की हिन्दी कविता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति हुई है।इस युग में एक ओर तो कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश की आजादी का आह्वान किया वहीं दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी।"11** माखनलाल चतुर्वेदी में राष्ट्रीयता का स्वरूप अंग्रेज शासकों के प्रति विद्रोह रूप में प्रस्फुटित हुआ है। उन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा अनेक युवकों को राष्ट्र के लिए आत्म–बलिदान की प्रेरणा दी है। 'जवानी' शीर्षक कविता में वे लिखते हैं– **"द्वार बलि का खोल चल भूडोल कर दें/एक हिमगिरि एक सर का मोल कर दें/मसल कर अपने इरादों सी उठाकर/दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दें/रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी/जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।जुआ"12** माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' कविता में गुलाम भारत की जेलों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लोगों को क्रांति करने का आह्वान करते हुए लिखा है–

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

"क्या?देख ना सकती जंजीरों का गहना/हथकड़ियां क्या?यह ब्रिटिश राज्य का गहना/कोल्हू की चर्रक चूं जीवन की तान/मिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने क्या गान/हूं मोट खींचता लगा पेट पर जुआ/खाली करता हूं ब्रिटिश अकड़ का कूआ।"13

'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' जैसी ओज पूर्ण कविताओं की रचना करने वाली प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने गीतों में युवकों को स्वतंत्रता के लिए मर मिटने का आह्वान किया है। वे बहिन के रूप में अपने देश के भाइयों को चुनौती देती हुई कहती हैं– **"आते हो भाई!पुनः पूछती हूँ/विषमता के बंधन की है लाज तुमको/तो बंदी बनो,देखो बन्धन है कैसा/चुनौती यह राखी की है आज तुमको"14।** सोहनलाल द्विवेदी ने गाँधीवाद और राष्ट्रीयता का चित्रण अनुभूतिपूर्ण शब्दों में किया है। 'सुना रहा हूं तुम्हें भैरवी' शीर्षक कविता में वे एक ओर तो भारत के अतीत गौरव का स्मरण करते हैं और दूसरी ओर अपने देशवासियों को जागृति का संदेश देते हैं– **"भूल गए क्या रामराज्य वह जहां सभी को सुख था अपना/जागो हिन्दू मुगल मराठे,जागो मेरे भारतवासी/जननी की जंजीरें बजतीं जाग रहे कड़ियों के छाले/सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी,जागो मेरे सोने वाले"15 ।** बालकृष्ण शर्मा नवीन राष्ट्रवादी कवियों में एक हैं। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीय प्रेम की भावनाएँ प्रधान हैं तथा राष्ट्रीय स्वर मुखर हैं। 'विप्लव गान' में उनके राष्ट्रप्रेम तथा विद्रोह का स्वर देखा जा सकता है– **"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,जिससे उथल–पुथल मच जाए/एक हिलोर इधर से आए.एक हिलोर उधर से आए/प्राणों के लाले पड़ जाएँ,त्राहि–त्राहि नभ में छा जाए/नाश और सत्यानाशों का,धुँआधार जग में छा जाए"16**

जयशंकर प्रसाद ने ऐसे गीत लिखे हैं जो भारत के अतीत गौरव के साथ–साथ भारतवासियों की विशेषताओं को उजागर करते हैं– **"अरुण यह मधुमय देश हमारा/जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा/सरस तामरस गर्भ विभा पर,नाच रही तरु शिखा मनोहर/छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा"।17** राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव भी देशप्रेम की भावना को अनुप्रेरित करता है। प्रसादजी ने भारतवासियों में देश प्रेम की भावना जागृत करने के लिए उन्हें प्राचीन गौरव का स्मरण दिलाते हुए लिखा है– **"हिमाद्रि तुंग श्रृंगार से प्रबुद्ध शुद्ध भारती/स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती/अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़प्रतिज्ञ सोच लो/प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो"18।** स्वदेशप्रेम को भूल बैठे भारतीयों के मन में देशप्रेम का भाव जागते हुए कवि निराला 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता में लिखते हैं– **"जागो फिर एक बार/प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें/अरुण–पंख तरुण–किरण/खड़ी खोलती है द्वार/जागो फिर एक बार"19**

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

राष्ट्रीय काव्य राष्ट्रीय चेतना का वाहक होता है। वह जनमानस में राष्ट्र के प्रति समर्पण की शक्ति,ओज एवं स्फूर्ति का भाव पैदा करता है। रामधारी सिंह दिनकर की वीर रस से परिपूर्ण कविताएं देशभक्तों को उद्वेलित करने वाली है। रेणुका में वे लिखते हैं– **"रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ/जाने दे उनको स्वर्ग धीर/पर फिरा हमें गांडीव–गदा/लौटा दे अर्जन भीम वीर/तु मौन त्याग कर सिंहनाद/रे तपी आज तप का न काल नवयुग–शंख ध्वनि जगा रही/तू जाग,जाग मेरे विशाल"**20

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी कवियों ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में कविता के माध्यम से सक्रिय सहभागिता निभाई तथा देश के जनमानस में चेतना,जागृति,आत्मविश्वास तथा स्वाधीनता की प्रेरणा देकर उनका मार्ग प्रशस्त किया। आज देश के समक्ष जातिवाद, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, धार्मिक कट्टरता जैसी अनेक चुनौतियाँ हैं जो भारत की एकता, अखंडता और समृद्धि के लिए घातक है। ऐसे समय में राष्ट्रीयता की भावना का मंद पड़ जाना बेहद चिंतनीय है। यह हमारे कवियों का कर्तव्य है कि जनमानस में राष्ट्रीय भावों का स्फुरण करके उन्हें नवनिर्माण की ओर अग्रसर करें।

सन्दर्भ **:** –

1.डॉ. विमल कुमार जैन, हिन्दी साहित्य रत्नाकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,1955, पृष्ठ सं.07
2.वही, पृष्ठ सं.09
3.वही, पृष्ठ सं.176
4.ब्रजरत्नदास(सं.), भारतेन्दु ग्रंथावली भाग–2, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संस्करण 1991, पृष्ठ सं.811
5.भारतेन्दु हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, संस्करण,2006, पृष्ठ सं.41
6.हेमंत शर्मा, भारतेन्दु समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1988, पृष्ठ सं. 654
7.वही
8.डॉ. शेखरचंद्र जैन, राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला, जयपुर पुस्तक सदन,जयपुर,प्रथम संस्करण 1973,पृष्ठ सं.18
9.महावीर प्रसाद द्विवेदी(सं), सरस्वती, अगस्त 1914
10.रामनरेश त्रिपाठी, स्वप्न, हिन्दी मंदिर प्रयाग, प्रथम संस्करण 1985, पृष्ठ सं.22
11.डॉ. नगेन्द्र (सं), हिन्दी साहित्य का इतिहास,मयूर पेपर बैक्स, संस्करण 1997,पृष्ठ सं. 533
12.माखनलाल चतुर्वेदी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली, वाणी प्रकाशन,1995, पृष्ठ सं.41
13.डॉ.नगेन्द्र (सं), हिन्दी साहित्य का इतिहास,मयूर पेपर बैक्स, संस्करण 1997,पृष्ठ सं. 531
14.डॉ.गणपति चंद्र गुप्त, साहित्यिक निबंध,लोकभारती प्रकाशन, संस्करण,2011,पृष्ठ सं.590
15.सोहनलाल द्विवेदी, भैरवी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, 1942, पृष्ठ सं.110
16.नंदकिशोर नवल(सं.), स्वतंत्रता पुकारती, साहित्य अकादमी, संस्करण 2006, पृष्ठ 96
17.डॉ. विंध्यवासिनी नंदन पाण्डेय(सं.), काव्य वीथि, भाषा प्रकाशन, राँची,संस्करण 2012,पृष्ठ सं.20
18.जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त, श्री प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ सं.112
19.सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, परिमल, राजकमल प्रकाशन,2015, पृष्ठ सं.132
20.रामधारी सिंह दिनकर, रेणुका(हिमालय), लोकभारती प्रकाशन 2022 , पृष्ठ सं.07